Ziyaae Duroodo Salaam (Hindi)

ज़ियाए दुरूदो सलाम

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हुज़ूरे अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

ज़ियाए दुरूदो सलाम

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (16 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ कर ईमान ताज़ा कीजिये ।

40 ह़दीसें दूसरे तक पहुंचाने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो शख़्स मेरी उम्मत तक पहुंचाने के लिये दीनी उमूर की 40 ह़दीसें याद कर लेगा तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन आ़लिमे दीन की हैसिय्यत से उठाएगा और बरोज़े क़ियामत मैं उस का शफ़ीअ़ और गवाह होउंगा । (شُعَبُ الْاِیمان ج۲ ص۲۷۰ حدیث۱۷۲۶) इस से मुराद **चालीस अह़ादीस** का लोगों तक पहुंचाना है अगर्चे वोह याद न हों । (اشعۃُ اللّمعات ج ۱ ص ۱۸۶) चुनान्चे ह़दीसे मुबारका में वारिद फ़ज़ीलत के ह़ुसूल की निय्यत से फ़ज़ाइले दुरूद शरीफ़ पर मब्नी चालीस फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पेश किये जाते हैं ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है । (مُسلِم ص۲۱۶ حدیث۴۰۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। **(تِرمذی ج۲ ص۲۷ حدیث٤٨٤)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾3﴿ जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। **(تِرمذی ج۲ ص۲۸ حدیث٤٨٤)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ मुसल्मान जब तक मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहता है फ़िरिश्ते उस पर रह़मतें भेजते रहते हैं, अब बन्दे की मरज़ी है कम पढ़े या ज़ियादा। **(ابنِ ماجه ج۱ ص۴۹۰ حدیث۹۰۷)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ नमाज़ के बा'द ह़म्दो सना व दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से फ़रमाया : ''दुआ मांग क़बूल की जाएगी, सुवाल कर, दिया जाएगा।''

(نَسائی ص۲۲۰ حدیث۱۲۸۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾6﴿ जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मुझ से अ़र्ज़ की, कि रब तआ़ला फ़रमाता है : ''ऐ मुह़म्मद ! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा उम्मती तुम पर एक सलाम भेजे, मैं उस पर दस सलाम भेजूं।''

(نَسائی ص۲۲۲ حدیث۱۲۹۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿ जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, दस गुनाह मिटाता है और दस दरजात बुलन्द फ़रमाता है । **(نَسائی ص۲۲۲ حدیث۱۲۹٤)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस मर्तबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सो मर्तबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा ।

(مُعْجَم اَوسَط ج٥ ص۲۵۲ حدیث۲۷۳۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़ह़ा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा ।

(اَلْقُرْبَةُ اِلٰى ربِّ العٰلمين، لابن بشكوال ص۹۰حدیث۹۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले ।

(اَلتَّرغِيب فی فضائل الاعمال لابن شاهين ص ١٤حدیث١٩)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾11﴿ जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व **महब्बत** की वजह से तीन तीन मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे।

(مُعْجَم کبیر ج۱۸ ص۳٦۲ حدیث۹۲۸)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾12﴿ तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।

(مُعْجَم کبیر ج۳ ص۸۲ حدیث ۲۷۲۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾13﴿ बेशक तुम्हारे नाम मअ़ शनाख़्त मुझ पर पेश किये जाते हैं, लिहाज़ा मुझ पर अह़सन (या'नी बेहतरीन अल्फ़ाज़ में) दुरूदे पाक पढ़ो।

(مُصَنَّف عَبْدُ الرَّزَّاق ج۲ ص۱٤۰ حدیث۳۱۱٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾14﴿ बेशक जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मुझे बिशारत दी : जो आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़मत भेजता है और जो आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर सलाम पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सलामती भेजता है।

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۱ ص٤۰۷ حدیث۱٦٦٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾15﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ की, कि मैं (सारे विर्द, वज़ीफ़े छोड़ दूंगा और) अपना सारा वक़्त दुरूद ख़्वानी में सर्फ़ करूंगा। तो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह

तुम्हारी फ़िक्रें दूर करने के लिये काफ़ी होगा और तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे। **(تِرمذی ج٤ ص٢٠٧ حدیث٢٤٦٥)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿16﴾ जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

(مَجْمَعُ الزَّوائِدج١٠ ص١٦٣ حدیث١٧٠٢٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿17﴾ मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइ़स है।

(مُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی ج٥ ص٤٥٨ حدیث٦٣٨٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿18﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में **महब्बत** रखने वाले जब बाहम (या'नी आपस में) मिलें और मुसाफ़ह़ा करें (या'नी हाथ मिलाएं) और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।

(مُسْنَدُ اَبِیْ یَعْلٰی ج٣ص٩٥حدیث٢٩٥١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿19﴾ जिस ने येह कहा :

''اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ''[1]

مدینہ

1 : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा और इन्हें क़ियामत के रोज़ अपनी बारगाह में मुक़र्रब मक़ाम अ़त़ा फ़रमा।

उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई। **(مُعْجَم کبیر ج۵ ص۲۵ حدیث ٤٤٨٠)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿20﴾ जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। **(مُعْجَم اَوسط ج۱ ص٤٩٧ حدیث۱۸۳۵)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿21﴾ ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों (या'नी घबराहटों) और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे। **(اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج۵ص۲۷۷ حدیث۸۱۷۵)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿22﴾ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। **(اِبنِ عَساکِر ج٦١ص٣٨١)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿23﴾ जो मुझ पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। **(مُصَنَّف عَبْدُ الرَّزّاق ج۱ ص۳۹ حدیث۱۵۳)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿24﴾ बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की त़ाक़त दी है, पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का

और उस के बाप का नाम पेश करता है, कहता है : ''फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आप पर इस वक़्त दुरूदे पाक पढ़ा है ।'' **(مُسندِ بَزّار ج٤ص٢٥٥ حديث١٤٢٥)**

سُبْحٰنَ اللّٰه ! दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला किस क़दर बख़्तावर है कि उस का नाम मअ़ वलदिय्यत बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पेश किया जाता है, यहां येह नुक्ता भी इन्तिहाई ईमान अफ़रोज़ है कि क़ब्रे मुनव्वर पर ह़ाज़िर फ़िरिश्ते को इस क़दर ज़ियादा क़ुव्वते समाअ़त दी गई है कि वोह दुन्या के कोने कोने में एक ही वक़्त के अन्दर दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले लाखों मुसल्मानों की इन्तिहाई धीमी आवाज़ भी सुन लेता है । जब ख़ादिमे दरबार की क़ुव्वते समाअ़त (या'नी सुनने की त़ाक़त) का येह ह़ाल है तो सरकारे वाला तबार, मक्के मदीने के ताजदार, मह़बूबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इख़्तियारात की क्या शान होगी ! वोह क्यूं न अपने ग़ुलामों को पहचानेंगे और क्यूं न उन की फ़रियाद सुन कर **बि इज़्निल्लाह** (या'नी **अल्लाह** की इजाज़त से) इन की इमदादें फ़रमाएंगे !

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला — जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद
मैं क़ुरबां इस अदाए दस्त गीरी पर मेरे आक़ा — मदद को आ गए जब भी पुकारा या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿25﴾ जिसे येह पसन्द हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश होते वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी हो उसे चाहिये कि मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़े । **(فِردَوسُ الْاَخبار بمأثور الْخِطاب ج٢ ص٢٨٤ حديث ٦٠٨٣)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾26﴿ फ़र्ज़ ह़ज करो, बेशक इस का अज्र बीस ग़ज़वात में शिर्कत करने से ज़ियादा है और मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ना इस के बराबर है। **(اَیضاً ج ۱ ص ۳۳۹ حدیث ۲٤۸٤)**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾27﴿ क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन[3] शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में होंगे। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : (1) वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे (2) मेरी **सुन्नत** को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला। **(اَلْبُدورُ السّافرةُ لِلسُّیُوطی ص ۱۳۱ حدیث ۳٦٦)**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾28﴿ जिस ने येह कहा : **"جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَّاھُوَ اَھْلُہٗ"**[1] 70 फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक उस के लिये नेकियां लिखते रहेंगे। **(مُعْجَم اَوسط ج ۱ ص ۸۲ حدیث ۲۳۵)**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾29﴿ मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। **(اَلکامِل لابنِ عَدِی ج ٥ ص ٥۰٥)**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

مدینہ

1 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी त़रफ़ से ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ऐसी जज़ा अ़ता फ़रमाए जिस के वोह अह्ल हैं।

﴾30﴿ जब तुम रसूलों (عَلَيْهِمُ السَّلَام) पर दुरूदे पाक पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं।

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۱ ص۳۲۰ حدیث۲۳۵٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾31﴿ जिस ने क़ुरआने पाक पढ़ा, रब तआ़ला की ह़म्द की और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूद शरीफ़ पढ़ा नीज़ अपने रब से मग़्फ़िरत त़लब की तो उस ने भलाई उस की जगह से तलाश कर ली।

(شُعَبُ الْاِیمان ج۲ ص۳۷۳ حدیث۲۰۸٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾32﴿ मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।

(فِردَوسُ الاخبار ج۱ ص٤۲۲ حدیث۳۱٤۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾33﴿ शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ पर पेश किया जाता है।

(مُعْجَم اَوسط ج۱ ص۸٤ حدیث۲٤۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾34﴿ शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ (या'नी जुमा'रात के ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर जुमुआ़ का सूरज डूबने तक) मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत कर लिया करो, जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा।

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۱۱۱ حدیث۳۰۳۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾35﴿ जब जुमा'रात का दिन आता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं, वोह लिखते हैं, कौन यौमे जुमा'रात और शबे जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है। (ابنِ عساکِر ج۳۴ص۱۴۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾36﴿ मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना पुल सिरात़ पर नूर है, जो रोज़े जुमुआ़ मुझ पर 80 बार दुरूदे पाक पढ़े उस के 80 साल के गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे। (ایضاً ج۲ص۴۰۸ حدیث۳۸۱۴)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾37﴿ जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۷ ص۱۹۹ حدیث ۲۲۳۵۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾38﴿ जो शख़्स बरोज़े जुमुआ़ मुझ पर सो बार दुरूदे पाक पढ़े, जब वोह क़ियामत के रोज़ आएगा तो उस के साथ एक ऐसा नूर होगा कि अगर वोह सारी मख़्लूक़ में तक़्सीम कर दिया जाए तो सब को किफ़ायत करे। (حِلیۃُ الْاَولیاء ج۸ ص۴۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾39﴿ जो मुझ पर शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की सो ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा, 70 आख़िरत की और तीस दुन्या की। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۱۱۱ حدیث ۳۰۳۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾40﴿ जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे।

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّيُوطی ج۷ ص۱۹۹ حدیث ۲۲۳۵۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुरूद न पढ़ने के नुक़्सानात पर

8 फ़रामीने नबवी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شُعَبُ الْاِيمان ج۲ ص۲۱۵ حدیث ۱۵۷۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (مُعْجَم کبیر ج۳ ص۱۲۸ حدیث۲۸۸۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾3﴿ उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (تِرمِذی ج۵ ص۳۲۰ حدیث۳۵۵۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿ जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है।

(مُسندِ امام احمدبن حنبل ج۱ ص۴۲۹ حدیث۱۷۳۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ जो क़ौम किसी मजलिस में बैठे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े वोह क़ियामत के दिन जब उस की जज़ा देखेंगे तो उन पर ह़सरत त़ारी होगी, अगर्चे जन्नत में दाख़िल हो जाएं । **(ایضاً ج۳ص۴۸۹ حدیث۹۹۷۲)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾6﴿ जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । **(مُصَنَّف عَبْدُ الرَّزَّاق ج۲ ص۱۴۲ حدیث۳۱۲۶)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿ जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । **(عَمَلُ الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ لابن السُّنّی ص۳۳۶ حدیث ۳۸۱)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ जो लोग किसी मजलिस में बैठते हैं फिर उस में न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हैं और न ही उस के नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं क़ियामत के दिन वोह मजलिस उन के लिये बाइ़से ह़सरत होगी । (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) चाहे तो उन को अ़ज़ाब दे और चाहे तो बख़्श दे । **(تِرمذی ج۵ ص۲۴۷ حدیث۳۳۹۱)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के 5 इर्शादात

﴾1﴿ **फ़रमाने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ है : नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم पर दुरूदे पाक पढ़ना गुनाहों को

इस क़दर जल्द मिटाता है कि पानी भी आग को उतनी जल्दी नहीं बुझाता और नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सलाम भेजना गरदनें (या'नी ग़ुलामों को) आज़ाद करने से अफ़्ज़ल है। **(تاریخ بغداد ج۷ ص ۱۷۲)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿2﴾ **फ़रमाने सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا है : तुम अपनी मजालिस को नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो। **(تاریخ بغداد ج۷ ص۲۱۶)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿3﴾ **फ़रमाने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ है : बेशक दुआ ज़मीन व आस्मान के दरमियान ठहरी रहती है और उस से कोई चीज़ ऊपर की त़रफ़ नहीं जाती जब तक तुम अपने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न पढ़ लो।

(تِرمذی ج۲ ص۲۸ حدیث۴۸۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿4﴾ **फ़रमाने सय्यिदुना मौला अ़ली मुश्किल कुशा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم है : हर शख़्स की दुआ पर्दे में होती है यहां तक कि मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आले मुह़म्मद पर दुरूदे पाक पढ़े।

(مُعجَم اَوسط ج۱ ص۲۱۱ حدیث۲۷۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

﴿5﴾ फ़रमाने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا है : जो नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ेगा उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते 70 मर्तबा रह़मत भेजेंगे। **(مُسندِ امام احمدبن حنبل ج۲ ص٦١٤ حديث٦٧٦٦)**

का'बे के बदरुद्दुजा तुम पे करोड़ों दुरूद
त़यबा के शम्सुद्दुह़ा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 264)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

100 एक चुप सो सुख

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

23 रबीउ़ल आख़िर 1434 सि.हि.
06-03-2013

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मकतबतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
40 हदीसें दूसरे तक पहुंचाने की फ़ज़ीलत	1	दुरूद न पढ़ने के नुक़्सानात पर 8 फ़रामीने नबवी	11
40 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	1	सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के 5 इर्शादात	12

मआख़ज़ व मराजे़अ

कताब	मतबूआ	कताब	मतबूआ
مسلم	دار ابن حزم بیروت	الفردوس بماثور الخطاب	دار الکتب العلمیۃ بیروت
ترمذی	دار الفکر بیروت	مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت
ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	جمع الجوامع	دار الکتب العلمیۃ بیروت
نسائی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الکامل	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مصنف عبد الرزاق	دار الکتب العلمیۃ بیروت	حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت
معجم کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	ابن عساکر	دار الفکر بیروت
معجم اوسط	دار الکتب العلمیۃ بیروت	البدور السافرۃ	مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ
مسند بزار	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ	الترغیب فی فضائل الاعمال	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مسند ابو یعلی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	القربۃ الی رب العلمین	دار الکتب العلمیۃ بیروت
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	اشعۃ اللمعات	
عمل الیوم واللیلۃ	دار القبلۃ للثقافۃ بیروت	حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ
فردوس الاخبار	دار الفکر بیروت	☆☆☆☆☆	☆☆☆☆☆

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

मस्जिद से तिन्का उठा कर बाहर फेंक दिया

हज़रत मुहम्मद बिन मन्सूर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि एक मरतबा हम इमाम बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की मजलिस में मौजूद थे कि एक आदमी ने अपनी दाढ़ी से तिन्का निकाला और फ़र्शे मस्जिद पर फेंक दिया, मैं ने देखा कि इमाम बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی कभी उस तिन्के की त़रफ़ देखते हैं और कभी लोगों की त़रफ़, जब लोगों की तवज्जोह वहां से हट गई तो आप ने हाथ बढ़ा कर वोह तिन्का उठाया और अपनी आस्तीन में डाल लिया फिर जब मस्जिद से बाहर निकले तो उसे फेंक दिया।

(तारीख़ बग़दाद ج۲ ص۱۳)